लोककवि मास्टर नेकीराम

डॉ. कमलेश कुमारी,

सहायक प्रोफेसर, अहीर कॉलेज रेवाड़ी

हरियाणा की भूमि अपने लोकसाहित्य से पर्याप्त रूप से समृद्ध है। इस प्रदेश की लोकमानस की जीवन्त अभिव्यक्ति यहां के लोक साहित्य में द्रष्टव्य है। यह प्रदेश भले ही क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिक विस्तृत न हो परंतु अपने लोकसाहित्य, सभ्यता एवं संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत विशाल है। लोकसाहित्य का अध्ययन किसी भी देश, राज्य, जाति की सभ्यता, धर्म, संस्कृति, रीति–रिवाज, कला एवं साहित्य का सूक्ष्म अवलोकन करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। अस्तु लोक साहित्य हरियाणवी संस्कृति का दर्पण है। लोक साहित्य का सूक्ष्म विवेचन करने के लिए विभिन्न विद्वानों ने इसे अपने–अपने ढंग से विभाजित किया है। मुख्य रूप से लोक साहित्य को लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकसंगीत तथा प्रकीर्ण साहित्य आदि भागों में बांटा जा सकता है। हरियाणा प्रदेश के लोक सांगीत और लोक गीतों में अंतर बताते हुए कला मर्मज्ञ एवं लोकनाट्य रूपों के गंभीर अध्येता डॉ. मलिक ने कहा– 'रागनी अधिकतर ऊंचे स्वरों में गाई जाती हैं और उसमें मुख्य स्वर एक या दो गायकों का होता है और गीत के स्वर मध्य मंद और मंथर गति में गाये जाते हैं।'[i] सांगीत मुख्यतः लोकगाथाओं, पौराणिक, ऐतिहासिक, लोकगाथाओं के प्रेम प्रसंग आदि का मिश्रण होता है। किंतु लोकगीतों में कथाओं, प्रेम प्रसंगों, लोकगाथाओं का अभाव दिखाई देता है। लोक साहित्य में लोककथाओं और सांगीत का अपना–अपना महत्व होते हुए भी सभी विधाओं की जननी लोककथा होती है। लोकथा गद्यात्मक होती है। किंतु सांगीत पद्य प्रधान होता है जबकि उसमें स्थान–स्थान पर वार्ता के रूप में गद्य का प्रयोग होता है। सांगीत में रागनी, अभिनय, नृत्य और संगीत का सामंजस्य होता प्रतीत होता है। इसी प्रकार लोककथा और सांगीत का अविभाज्य संबंध है। लोकगाथाओं के संक्षिप्त रूप बनाकर सांगीत प्रस्तुत किए जाते हैं। लोकगाथाओं के कथानक लंबे होते हैं, वहीं सांगीत का कथानक छोटा होता है।

वस्तुतः लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं रूपी नदी में प्रत्येक धारा का विशेष महत्व है, कोई भी लहर महत्वहीन और रसहीन नहीं कही जा सकती। परंतु सांगीत अति विशिष्टता एवं उपादेयता लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण विधा है। इस विधा के अंतर्गत लोकगीत के साथ–साथ लोकसंगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोक भजन आदि सम्मिलित हैं। सांगीत में संगीत, नृत्य और अभिनय की त्रिवेणी जनमानस को विशेष रूप से आकर्षित करता है।

हरियाणा की माटी लोकनाट्य सांग (सांगीत) के लिए उर्वरा रही है। हरियाणा की सांग परम्परा अत्यंत प्राचीन है। इस बात को डॉ. शिवताज सिंह 'ताज' के शब्दों में कह सकते हैं 'हरियाणा का सांग कदाचित इसके आद्य प्रारूपों का एक सशक्त स्वरूप रहा है, जिसमें हजारों लोगों को रात से लेकर सूर्योदय तक भावसागर में डिबोए रखने की क्षमता है। वह इसलिए कि अभिनय के साथ स्थिति की मांग के अनुरूप दिल को हिलाकर रख देने वाली गीत की संगति सांग का प्राणाधार है।'[ii]

'हरिभूमि' हरियाणा में एक से बढ़कर एक सांगी अर्थात सांगीत हुए हैं। उनकेक सांगों में मौलिकता को देखा जा सकता है तथा उनके

द्वारा अपनी सृजनात्मक मेधा के साथ सांग को गौरव प्रदान किया। हरियाणा के प्रमुख बाजे भगत, मास्टर मूलचंद, मानसिंह जोशी, पंत्र लखमीचन्द, पं. मांगेराम, पं रामकिशन व्यास, धनपत सिंह, रामकुमार खालेटिया तथा मास्टर नेकीराम का नाम विशेष आदर से लिया जाता है। परंतु प. लखमीचंद, प. मांगेराम और मा. नेकीराम तीनों ही प्रमुख सांगी समकालीन थे तथा इनकी रचनाओं ने सांग रूपी यज्ञ में समीधा का कार्य किया। यद्यपि इन तीनों ही सांगियों से पूर्व सांग का उद्‌भव एवं विकास हो चुका था परंतु इन्होंने अपने प्रयासों की नई ऊर्जा और खाद डालकर सांगरूपी खेतों में फसलों को लहरा दिया। इस प्रकार उन्होंने अपने सांगों से अपने काल को सांगों का स्वर्णकाल बना दिया। प. लखमीचन्द का जन्म 15 जुलाई 1903, प. मांगेराम का जन्म जुलाई 1905 तथा स्वर्णयुग को अपनी सांगीत प्रतिभा रूपी स्वर्णिम किरणों की आभा से युक्त करने वाले मा. नेकीराम का जन्म 6 अक्टूबर 1919 में हुआ। प. लखमीचन्द और पं. मांगेराम ब्राह्मण कुल में जन्मे। मा. नेकीराम का जन्म मेघवाल (बुनकर) नाम दलित जाति में हुआ। मा. नेकीराम ने कबीर की भांति एक दलित परिवार में जन्म लेकर आजीवन सामाजिक बुराइयों पर करारा प्रहार करते रहे। विलक्षण अभिनय व जादुई व्यक्तित्व को लिए, अद्‌भुत गायन–शैली के धनी, सांग कला के बेताज बादशाह मा. नेकीराम की जन्म भूमि रेवाड़ी जिले के छोटे से गांव जैतड़ावास रही है। मा. नेकीराम को सांग कला विरासत में मिली। उनके पिता मा. मूलचन्द की गिनती अपने युग के प्रसिद्ध सांगियों में रही है। वे मुख्य रूप से देशभक्त और समाज सुधारक के रूप में उभरे हैं। उपर्युक्त विशेषता की झलक उनकी रागनियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने अपनी सांग कला का परचम लहराया। मूलचन्द के पुत्र नेकीराम ने भी अपनी अभिनय कला, संगीत एवं नृत्य का सिक्का जमाया, जिसे देखकर ऐसा लगता है मानो मा. मूलचन्द यह कला अपने पुत्र को बपौती के रूप में दे गए हों।

मास्टर नेकीराम– सुविख्यात सांग सम्राट मास्टर मूलचंद व श्रीमती लाडो देवी के घर में 6 अक्टूबर, 1915 को जन्मे मास्टर नेकीराम एक प्रतिभा संपन्न गायक व उच्चकोटि के कवि थे। मास्टर नेकीराम की प्रारंभिक शिक्षा समीपवर्ती गांव भाड़ावास में हुई। बचपन से ही मा. नेकीराम सांग कला में रूचि रखते थे। मा. नेकीराम अपने पिता के शागिर्द बने और 14 वर्ष की आयु में ही अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देते हुए पहले सांग की प्रस्तुति दी। उस समय के प्रसिद्ध सांगी पं. लखमीचन्द को भी प्रभावित किया। मूलचंद के द्वारा प्रस्तुत सांग में नेकीराम ने राजकुमार की भूमिका निभाई तब इस बाल कलाकार की प्रतिभा को देखकर पं. लखमीचन्द ने घोषणा की कि यह बालक एक दिन बहुत बड़ा सांगी बनेगा और सांग की दुनिया पर राज करेगा। पंडित जी की यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। मा. नेकीराम के परिवार पर संत गरीबनाथ के आशीर्वाद की छाप थी, फलस्वरूप मा. नेकीराम ने गरीबनाथ के शिष्य बाबा गोपालनाथ को अपना गुरू बनाया और आजीवन बाबा गरीबनाथ के वार्षिक मेले में अपने सांग आयोजित करते रहे।

मा. नेकीराम का व्यक्तित्व इतना आकर्षक, भव्य तथा अभिनय इतना जीवंत होता था कि दर्शक चाहकर भी न उठ पाता था तथा उनकी सांग गंगा में गोते लगाकर आनंद का अनुभव करता था। मा. नेकीराम के व्यक्तित्व एवं अभिनय कला की जीवंत झांकी इन शब्दों में देखी जा सकती है– 'हरियाणा के इस महान स्वर सम्राट की यह विशेषता थी कि ज्यों–ज्यों रात गहराती जाती थी त्यों–त्यों इनकी आवाज का जादू बढ़ता चला जाता था। जब मा. नेकीराम सांग करने के लिए भव्य मंच पर आते थे तो उनकी वेशभूषा देखने योग्य होती थी। सिर पर रेशमी रूमाल, बंद गले का कोट, उस पर

जगमगाते तमगे, सफेद धोती, हाथ में बैंत और सुडौल शरीर उनके व्यक्तित्व को चार चांद लगा देते थे।'[iii]

नेकी के दरिया मा. नेकीराम स्वर–सम्राट होने के साथ–साथ एक सच्चे समाजसेवी भी थे। उदाहरण स्वरूप हरियाणा और राजस्थान में अनेक स्कूल, बावडियां, गोशालाएं एवं धर्मशालाएं बनवाने में जीतोड़ मेहनत की। यही नहीं समाज को घुन की तरह खाने वाली सामाजिक बुराइयों जैसे– छुआछूत, जातिभेद, मद्यपान जैसी बुराइयों के खिलाफ लड़ते हुए आजीवन दलितों के उत्थान में लगे रहे।

मा. नेकीराम के प्रसिद्ध एवं प्रमुख सांग लीलो–चमन, हीरा–रांझा, पिंगला–भृतहरि, चापसिंह–सोमवती, पूर्णमल, अमर सिंह राठौर, धर्मदेवी नौबाहार, राजाभोज, सेठ ताराचन्द, शाही लकड़हारा, राजा रिसालू, मीराबाई आदि रहे हैं। चापसिंह–सोमवती सांग तो मा. नेकीराम की सांग कला का चरम उत्कर्ष कहा जा सकता है। पूर्णमल सांग में उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा का लोहा मनवाया। पूर्णमल के यौवन पर आकर्षित उसकी काम–कुंठित मौसी किस प्रकार पूर्णमल को रिझाती है तथा जब वह उसकी रिझावनी हंसी पर आकृष्ट नहीं होता तब उसे अपने पति राजा सुलेमान से मृत्यु दण्ड की सजा दिलवा देती है। पूर्णमल की मां लुणादे की इस हरकर पर दर्दीले स्वर में कहती है–

खता बता मेरे पूर्णमल की, क्यूं पकड़ा बिन खोट।

दूबली दो साढ़, लाग्यी दुखती पै चोट।

चापसिंह–सोमवती सांग में मा. नेकीराम ने अपनी अभिनय कला की छाप छोड़ी। चापसिंह जब अपनी पत्नी की बेवफाई और विश्वासघात पर क्रोधित होते हैं, तब उस क्षण को व्यक्त करने के लिए मा. नेकीराम तेजस्वी आवाज, भाव–भंगिमा, भृकुटियों के ज्वार–भाटा और बेंत के हवाई आक्रमण से चापसिंह के किरदार को जिस प्रकार जीते थे, वह उनकी सांग साधना का परिचायक था–

राण्ड तू बिजली बन रही घन की,

रूप मेरा भट्टी दगै अगन की।

तेरे तन मन की सब जाणी, इब न संतोष धारता

तू हंस–हंस के बतलाई, शेरखां की बनी लुगाई।

सुण ले हूर, हट ज्या दूर–दूर–दूर. . .।

मा. नेकीराम एक साथ भक्त, कवि, समाज–सुधारक रूप में ख्याति प्राप्त की है। उनकी भक्ति भावना का उदाहरण निम्न रूप में देखा जा सकता है–

'हर–हर–हर महादेव भोले नाथ पिता।

तू स्वामी मैं सेवक जोडू हाथ पिता।।'

मा. नेकीराम एक राष्ट्रभक्त सांगी थे। उनके सांगों में राष्ट्रप्रेम की झलक स्पष्ट रूप में देखी जा सकती है–

'हमनै म्हारा देश प्राणों से प्यारा, सब देशों मैं देश सर ताज म्हारा।'

अपने देश के पूर्वजों को याद करते हुए मा. नेकीराम ने अपने देश की सम्पन्नता को भी अभिव्यक्ति दी है–

'थे यौद्धा और बलवान देश मैं

बड़े–बड़े विधवान दो मैं

माया के भण्डारी ये धनवान देश मैं

पृथ्वीराज यही तो थे, तीर अंदाज यही तो थे, व महाराज यही तो थे

जैसे महाराणा, जा जंगल लिया ठिकाणा हुआ दुखी बेचारा।'

मा. नेकीराम ने हरियाणवी जन–जीवन को एकदम निकट से और अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से देखा–परखा था। उन्हें जीवन के हर क्षेत्र का व्यवहारिक ज्ञान

था। जिसका उन्होंने अवसरानुकूल प्रयोग किया और जनसाधारण में लोकप्रिय हुए–

'बेल बधेवा आगत निसानी, खोटी बीर बताते क्यों?

उल्टी बुद्धि, मत गुद्दी, न्यू सब बेपीर बताते क्यों?

सुंदर स्वच्छ पदार्थ कर दिये, दोस सरीर बताते क्यों?

चार आश्रम कायम कर दिए, दोस सरीर बताते क्यों?

हो पूरी पक्की पंसेरी ना पासंग घाट्य करै सै।'

मा. नेकीराम एक उपदेशक के रूप में लोगों को चेतावनी देते हुए दिखाई देते हैं–

त्याग आलस्य जाग मुसाफिर, काफी नींद सो लिया।

हीरा जन्म अनमोल तनै तो कोड़ी मोल खो दिया।'

मा. नेकीराम जी के भी सांग इनका मौलिक सृजन है जिसकी भाषा सहज, सरल एवं पात्रानुकूल ठेठ आंचलिक बोली है जो इन्हें लोकमन से जोड़ती है। इनकी रचनाओं में भावपक्ष एवं कला पक्ष का अद्भुत समन्वय देखा जा सकता है। भाव पक्ष जितना सशक्त है, वहीं कला पक्ष इतना ही उन्नत है। इनका काव्य बिम्ब प्रतीकों एवं उपमानों से भरा पड़ा है। लोक छंदों विशेषकर रागनी पर इनकी गहरी पकड़ है जो इनकी गहन काव्य प्रतिभा को दर्शाती है। इनके सांग इस अंचल के संस्कारों एवं संस्कृति का सजीवता को लिए हुए हैं।

लोक नीति को बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत करते हुए मास्टर नेकीराम ने लोगों को सीख दी है। उनके अनुसार गुरु ही हमें मोक्ष प्राप्ति में सहायता देता है। गुरु की महत्ता को प्रदर्शित करते हुए कहते हैं–

मिट्ठा बोलै, नय कै चालै तै माणस का कुछ घटता ना।

संतोष शांति सबर बिना क्रोध मनुष्य का हटता ना।

नेकीराम गुरु बिन कटता ना जन्म–जन्म का फेरा।

इसी प्रकार उनका विचार था कि गुरु को समर्पित हुए बिना 'रिद्धि–सिद्धि' नहीं मिल सकती और न ही गुरु बिना ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। इस संसार रूपी भव सागर से पार उतारने वाला केवल सतगुरू ही है–

'सतगुरु की शिक्षा लागे बिन आवै ज्ञान कड़ै सै।

कह नेकीराम खुद टेर सुणैंगे सतगुरु अपने जन की।'

मा. नेकीराम के काव्य की प्रमुख विशेषता यह है कि इन्होंने अपने काव्य में लोक प्रचलित मुहावरे एवं लोकोक्तियों का खुलकर प्रयोग किया है–

1. कीड़ी उपर कटक तोल रही तेरे हिये बीच समाई कोन्या।
   सीस मार के मरगे लुकमान दवा बहम की पाई कोन्या।
2. मंजिल हो आसान जगत में हो माणस साबत नीत का।
3. चोर ठिकाणै लागे बिन आवै इमान कड़े सै।
4. माता–पिता के दर्शन कर अड़सठ तीर्थ नहाना चाहिए।

मा. नेकीराम के काव्य में कहीं भी अश्लीलता नहीं आई। उन्होंने अपने सांगों में अश्लील शब्दों का प्रयोग तक नहीं किया। हालांकि उनके समकालीन सांगियों ने अपने सांगों में अश्लील शब्दों का समावेश किया। उन्होंने श्रृंगार रस वर्णन में पूरे भाव के साथ इस रस की छटा बिखेरी। यौवन भार से लड़ी काम–तरंगित कामांगना का चित्रण करते हुए वे कहते हैं–

'तलै टोकणी उपर बांटा लचक पड़ै थी कड़ मै
सारस जैसी जोट आई कुएं की जड़ मैं
मद जोबन की बणी दिवाली शान का त्योहार
तेरह–चौदह–पंद्रह सोलह उम्र का विस्तार
घुंघट हट ज्या तै माणस कट जा मोटे रासै मैं
दुनिया बहती जाय बाहण, तेरे ईश्क तमासे में
मिठी–मिठी बोलै जाणै कोयल बोलै बड़ मैं
छम–छम करती चाल चलै जणो मोर नाच रह्या झड़ मैं।'

डॉ. शिवताज सिंह ने इन पंक्तियों की प्रशंसा करते हुए मा. नेकीराम को कालिदास के बराबर ला खड़ा कर दिया। 'इन पंक्तियों में मदमस्त तरुणाई की अरुणाई को दीपावली की जगमग से उपमित करना कितना सार्थक प्रयोग है। दीपावली, खिली–खिली खुशहाली का प्रतीक, सुंदरता और पवित्रता का प्रतीक। इस (दीपशिखा) उपमा का प्रयोग कभी कवि कालिदास ने भी किया था।'[iv]

वात्सल्य की भावपूर्ण झांकियां इनके सांगों में देखने को मिलती है–

'नौ महीने तक बोझ भरी मनै पेट पाड़ कै जाया।
भय पड़ते ही जुदा हुआ ना दरस मात का पाया।'

वस्तुतः मा. नेकीराम एक उच्च कोटि के लौकिक कवि होने के साथ–साथ उपदेशक रूप में भी सामने आए। अतः इनके काव्य में कवित्व, भक्ति भाव, दर्शन, राष्ट्रभक्ति और धर्मोपदेश एक साथ मिलते हैं। मा. नेकीराम का आदर्श (बाबा साहब अंबेडकर का यह नारा) 'शिक्षित बनो' था। यही कारण था कि वे आजीवन अशिक्षा और अंधविश्वास से लड़ते रहे। सांगकर्म की क्षमता क्षीण होने के उपरांत वे 'दलित न्याय पंचायत' के अध्यक्ष बने। जीवन के वर्णवादी, जातिवादी, विषमतावादी और अलगाववादी ताकतों का विरोध करते रहे और एक समतामूलक समाज की स्थापना पर जोर दिया। मास्टर नेकीराम हरियाणा की सांग परंपरा में एक मजबूत स्तंभ थे। इन्होंने लगभग 30 सांगों का सृजन किया और 60 वर्षों तक सांग मंचन किया। इनका सांग मंचन लगभग 9 घंटे तक चलता था। इनकी प्रमुख विशेषता यह थी कि जैसे–जैसे रात बढ़ती थी वैसे–वैसे इनकी आवाज ऊंची तथा सुरीली होती चली जाती थी। इसी विशेषता के कारण ये सांग प्रेमियों के दिलों में वास करते थे।

डॉ. शिवताज सिंह ने इनके विषय में उचित ही कहा है– 'इन्होंने प्रमाणित कर दिया है कि 'मैन इज दा स्टाइल इट सैल्फ।' ऐसी महान विभूति का स्वर्गवास 10 जून 1996 को 60 वर्ष के सांग–कर्म के उपरांत 77 वर्ष की आयु में सांगाकाश का यह सितारा सदा–सदा के लिए उन्नत ब्रह्माण्ड में विलीन हो गया।

Copyright © 2016, Dr. Kamlesh Kumari. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

[i] डॉ. राममेह सिह, हरियाणी संगीत का उद्‌भव और विकास, पृ. 53
[ii] डॉ. शिवताज सिंह, 'ताज', हरियाणा के लोककवि : मास्टर नेकीराम, हरिगंधा, पृ.29
[iii] दैनिक जागरण, 3 अगरस्त 2004
[iv] हरियाणा के लोककवि : मास्टर नेकीराम, डॉ. शिवताज सिंह 'ताज', हरिगंधा, पृ.36